

अध्याय-6

शहरीकरण एवं शहरी-जीवन

शहरीकरण, गाँव का शहर या नगर के रूप में विकसित होने की प्रक्रिया है, जहाँ गैर कृषि-उत्पादन, व्यापार व व्यवसाय आदि आर्थिक क्रियाओं की प्रमुखता होती है।

गाँव → गंज → कस्बा → शहर या नगर → महानगर

गाँव	गाँव की जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि व्यवसाय से जुड़ा होता है। इनकी आय का प्रमुख स्रोत कृषि संबंधी उत्पाद होते हैं। अतः गाँव की मुख्य विशेषता एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है, जो मूलतः जीवन निर्वाह अर्थ व्यवस्था पर आधारित है।
गंज (हाट)	एक छोटे से बाजार को गंज कहा जाता है। गंज कपड़ा, फल, सब्जी, दूध एवं अन्य प्रकार के दैनिक उपभोग की वस्तुओं का विक्रय केन्द्र था। गंज विशिष्ट परिवारों तथा सेना के लिए सामग्री उपलब्ध कराते थे।
कस्बा	ग्रामीण अंचल में स्थित एक छोटे शहर को माना जाता है जो अधिकांशतः स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति एवं विशिष्ट व्यक्ति का केन्द्र होता है।
शहर	शहर गैर कृषि-उत्पादन गतिविधियों का केन्द्र था। शहर उद्योग, व्यापार, वाणिज्य व प्रशासनिक इकाई का केन्द्र होता है।
महानगर	किसी प्रांत या देश का विशाल और घनी आबादी वाला शहर जो प्रायः वहाँ की राजधानी भी होता है।

शहरों के उदय के कारण

आधुनिक शहरों के विकास में औद्योगिक पूँजीवाद, उपनिवेशवादी व साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का प्रसार, लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास आदि ने निर्णायक भूमिका निभाई।

शहरीकरण की प्रक्रिया

- ग्रामीण एवं सामंती व्यवस्था की जगह प्रगतिशील शहरी व्यवस्था की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ी।
- भूमि निवेश, तकनीकी खोज एवं स्थायी कृषि के प्रभाव से संपत्ति का जमाव हुआ। फलस्वरूप श्रम विभाजन ने व्यावसायिक विशिष्टता को जन्म दिया। इन परिवर्तनों के आधार पर शहरी जीवन के उद्भव को एक आधार प्रदान किया।

- कृषक वर्ग का नगरों की ओर बढ़ना एक गतिशील मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था के आधार पर संभव हुआ जो प्रतियोगी एवं उद्यमी प्रवृत्ति से प्रेरित था।
- आर्थिक तथा प्रशासनिक संदर्भ में ग्रामीण तथा शहरी व्यवस्था को दो मुख्य आधार हैं—जनसंख्या का घनत्व एवं कृषि आधारित आर्थिक क्रियाओं का अनुपात। शहरों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है। शहरों से गाँवों को उनके आर्थिक प्रारूप में कृषिजन्य क्रियाओं के आधार पर अलग किया जाता है।

शहर की विशेषता

शहरी जीवन तथा आधुनिकता एक-दूसरे के पूरक हैं। शहरी क्षेत्र को आधुनिक व्यक्ति का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है। शहर व्यक्ति के अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की असीम संभावनाएँ प्रदान करता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, व्यवसाय की स्वतंत्रता आदि सुविधाएँ शहरों में उन्नत अवस्था में होती हैं।

गाँव एवं शहर में विभिन्नता

ग्रामीण लोगों के जीवन—यापन के मुख्य साधन हैं — कृषि, पशुपालन, घरेलू उद्योग—धंधे। गाँवों की जनसंख्या सीमित होती है। इसके विपरीत शहरों में रहने वाले लोग कृषि—उत्पादक गतिविधियों पर निर्भर होते हैं। उद्योग धंधे, व्यापार व वाणिज्य की प्रमुखता होती है। शहरों की आबादी सघन होती है।

शहरों की समस्या

शहरों के उदय ने निम्न समस्याओं को जन्म दिया।

- बाजारवाद का उदय
- जनसंख्या घनत्व में वृद्धि
- मलिन वस्तियों का उदय
- अपराधिक प्रवृत्ति में वृद्धि
- यातायात की समस्या
- स्वास्थ्यपरक सुविधाओं का अभाव
- प्रदूषण की समस्या

सामाजिक बदलाव और शहरी जीवन

शहरों में नए सामाजिक समूहों का अभ्युदय हुआ। शहरी जीवन विभिन्न वंश, जाति, नस्ल, क्षेत्र, समुदाय, सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व करता है।

व्यावसायिक पँजीपति वर्ग	<p>शहरों के उद्भव का एक प्रमुख कारण व्यावसायिक व पँजीपति वर्ग के उदय के साथ संभव हुआ। यह वर्ग शहरों में उत्पादन एवं व्यापारिक गतिविधियों से जुड़े थे। मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति के कारण इस वर्ग के पास धन का संचय हुआ।</p> <p>सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर यह विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यक वर्ग था, जो स्वतंत्र उन्मुक्त एवं विलासी जीवन व्यतीत करता था। इनकी समाज</p>
--------------------------------	--

	में काफी प्रतिष्ठा थी। शहरी समाज में यह वर्ग एक नए सामाजिक शक्ति के रूप में उभरकर आए।
मध्यम वर्ग	शहरीकरण की प्रक्रिया ने मध्यम वर्ग को शक्तिशाली बनाया। शहरों में एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जो बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में स्वीकार किए गए। यह वर्ग वेतनभोगी के रूप में विभिन्न पदों पर कार्यरत थे—जैसे: शिक्षक, वकील, चिकित्सक, इंजीनियर, लिपिक आदि। इन्होंने समाज में शोषण और अत्याचार के विरुद्ध अनेक आन्दोलनों का नेतृत्व किया।
श्रमिक वर्ग	आधुनिक शहरों में जहाँ एक ओर पँजीपति वर्ग का उदय हुआ तो दूसरी ओर श्रमिक वर्ग का। शहरों में फ़ैक्ट्री प्रणाली की स्थापना के कारण भूमिहीन कृषक वर्ग बेहतर रोजगार की तलाश में बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन किया। यह वर्ग कारखानों में मजदूर के रूप में काम करते थे, जिनका कारखानों के मालिकों द्वारा अत्यधिक शोषण किया जाता था। श्रमिक वर्ग ने अपने हितों की रक्षा के लिए श्रमिक संघों की स्थापना कर आन्दोलन को संचालित किया।

औपनिवेशिक भारतीय शहर : बम्बई

- बम्बई औपनिवेशिक भारत की वाणिज्यिक राजधानी थी। बम्बई भारत का एक प्रमुख बंदरगाह था, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक मुख्य केन्द्र था। यहाँ से कपास और अफीम जैसे वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहाँ व्यापारी, महाजन, कारीगर, दूकानदार भी बसे थे।
- 1800 ई0 के आसपास बम्बई फोर्ट-एरिया शहर का एक केन्द्र बिन्दु था, जो दो भागों में बँटा हुआ था। एक भाग में नेटिव (स्थानीय निवासी) रहते थे और दूसरे भाग में यूरोपीय निवास करते थे।
- कपड़ा मिलों के कारण लोग बम्बई में आकर बसने लगे, जिसके कारण बम्बई में आबादी का दबाव बढ़ गया। फलतः लोग घनी आबादी वाले चॉलों (बहुमंजिली इमारत) में रहते थे। व्यावसायिक उद्येश्यों एवं आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए समुद्री जमीन को विकसित किया जाने लगा।
- 1784 में 'भूमि विकास परियोजना' लागू की गई।
- 1898 ई0 में 'सिटी ऑफ बॉम्बे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट' की स्थापना की गई।
- 1918 ई. में बम्बई के मकानों के महंगे किराए को समित करने के लिए किराया कानून पारित किया गया।

पाटलिपुत्र पटना

- पटना शहरीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल में पटना पाटलीपुत्र के नाम से जाना जाता था। प्राचीन काल में यह नगर शिल्पकला, व्यापार, शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र था।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध के शासक आजातशत्रु ने पाटलिपुत्र में एक सैनिक शिविर बनाया था। कालांतर में यह मगध साम्राज्य की राजधानी बना।
- मौर्यकालीन राजप्रसाद के अवशेष दक्षिण पटना में स्थित कुम्हार से प्राप्त हुए हैं।
- पाटलिपुत्र नगर प्रशासन के अनेक पहलुओं पर चर्चा यूनान निवासी मेगास्थनीज की रचना 'इंडिका' में उपलब्ध है।
- 1666 ई0 में सिखों के दसवें और अंतिम गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म पटना में हुआ था।
- अफगान शासक शेरशाह सूरी के समय यह प्रशासनिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।
- मुगल शासक अकबर के शासनकाल में पटना एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में विख्यात था। अठारहवीं शताब्दी में मुगल राजकुमार अजीमुशान ने इस नगर का नवनिर्माण कराया और इसे अजीमाबाद नाम दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के समय पटना व्यापारिक केन्द्र बना रहा, जहाँ अनेक देशों के व्यापारी सक्रिय थे।

सिंगापुर

- सिंगापुर एक सुनियोजित शहर है, जो विश्व में नगर विकास का आदर्श प्रतिरूप प्रस्तुत करता है। 1965 ई0 में पीपुल्स एक्शन पार्टी के अध्यक्ष ली कुआन येव के नेतृत्व में सिंगापुर को आजादी मिली।
- सिंगापुर के सुनियोजित विकास के लिए आवास एवं विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। आवासीय खंडों में जनस्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए हवा निकासी एवं अन्य स्वास्थ्य-परक सुविधाओं की व्यवस्था की गई। सड़कों का निर्माण किया गया एवं परिवहन व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए यातायात नियम बनाए गए। शहरों में लोगों के आने पर नियंत्रण रखा जाने लगा।

पेरिस

- बेरॉन हॉसमान ने पेरिस के पुनर्निर्माण का काम किया। शहर में सीधी एवं चौड़ी सड़कें, बुलेवार्ड्स (छायादार सड़क) पार्क खुले मैदान का निर्माण किया गया।
- शहर में शांति व्यवस्था के लिए पुलिस तैनात किए गए। पेरिस ऐसी राजधानी के रूप में जाना जाता है, जो केवल वास्तुकला के लिए नहीं बल्कि सामाजिक और बौद्धिक केन्द्र के रूप में विख्यात है।

व्यावसायिक पँजीवाद

व्यापक स्तर पर व्यवसाय, बड़े पैमाने पर उत्पादन, मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था, काम के बदले वेतन, मजदूरी का नगद भुगतान, गतिशील एवं प्रतियोगी अर्थव्यवस्था, स्वतंत्र उद्यम, मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति, मुद्रा, बैंकिंग, बीमा, अनुबंध कम्पनी साझेदारी, ज्वाइंट स्टॉक, एकाधिकार आदि व्यावसायिक पँजीवादी व्यवस्था की विशेषता रही है।

- 1810 ई0 से 1880 ई0 तक लंदन की आबादी 10 लाख से बढ़कर 40 लाख हो गई।
- विश्व की पहली भूमिगत रेल 10 जनवरी 1863 ई0 में बना। यह रेलवे लाईन लंदन की पैडिंग्ल और केरिंगटन स्ट्रीट के बीच स्थित है।
- 1870ई0 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कानून बना।
- 1902 ई0 में फैक्ट्री कानून के अन्तर्गत बच्चों को कारखानों में काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- वास्तुकार एवेनेजर हावर्ड लंदन में **गिर्द हरित पट्टी** विकसित की जिसे **गार्डन सिटी** नाम दिया गया।
- शहरों के विस्तार में भव्य परकोटे का निर्माण हुआ।
- लंदन भारी संख्या में प्रवासियों को आकर्षित करने में सफल हुआ।
- विकासशील देशों में नगरों के प्रति रुझान देखा जाता है।
- नगर प्रबंधन के द्वारा निवास तथा आवासीय पद्धति, जनस्वास्थ्य, जन यातायात के साधन इत्यादि के उपाय किये गये।
- ब्रिटेन में **मैनचेस्टर**, **लंकाशायर**, **शेफील्ड** औद्योगिक नगर थे।

◆◆◆